साखी 32

गुरु गोरखनाथ अंक

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

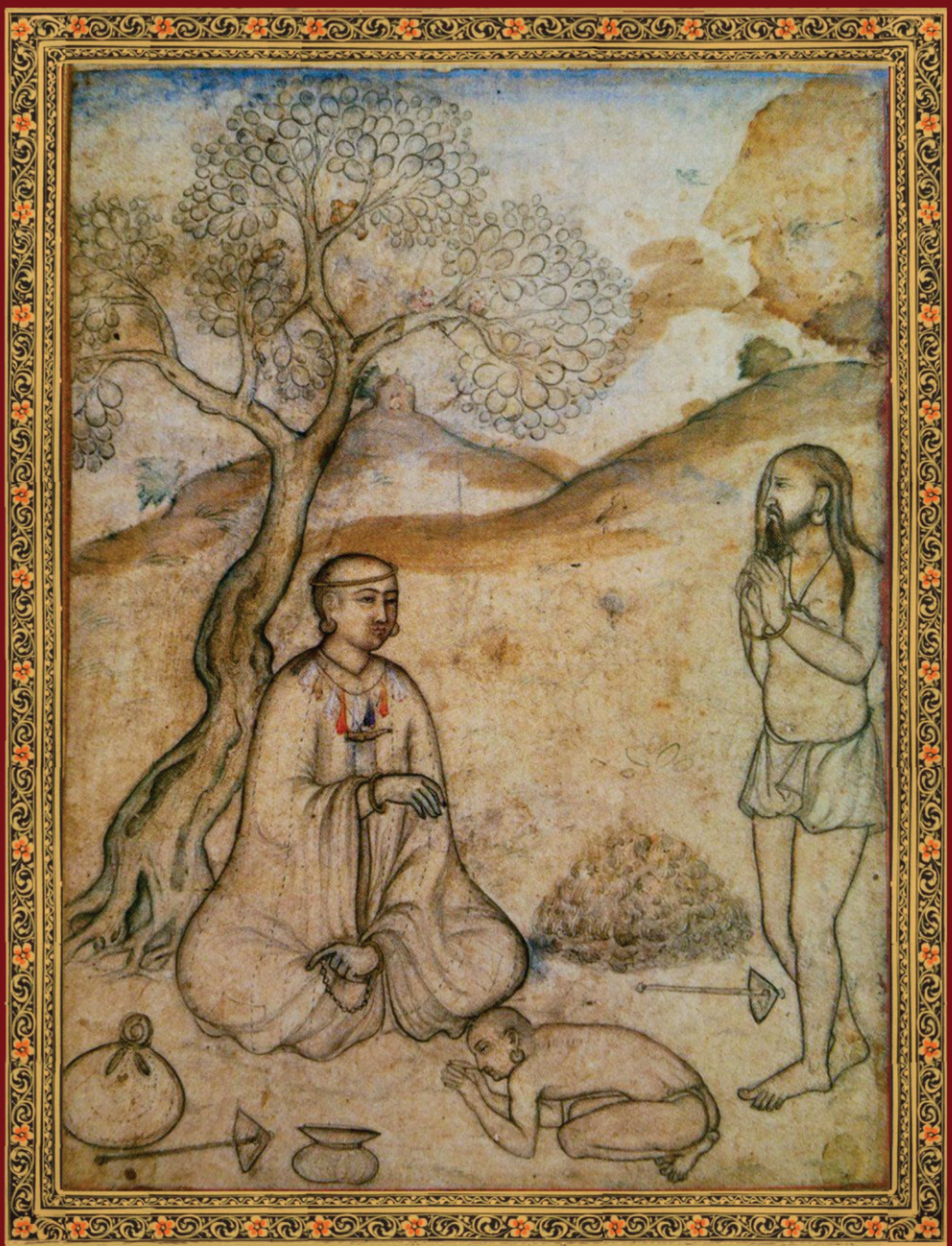

कोई न्यंदै कोई ब्यंदै,
कोई करै हमारी आसा
गोरख कहे सुनौ रे अवधू,
यह पंथ खरा उदासा

- गोरखनाथ

"साखी" प्रेमचंद साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

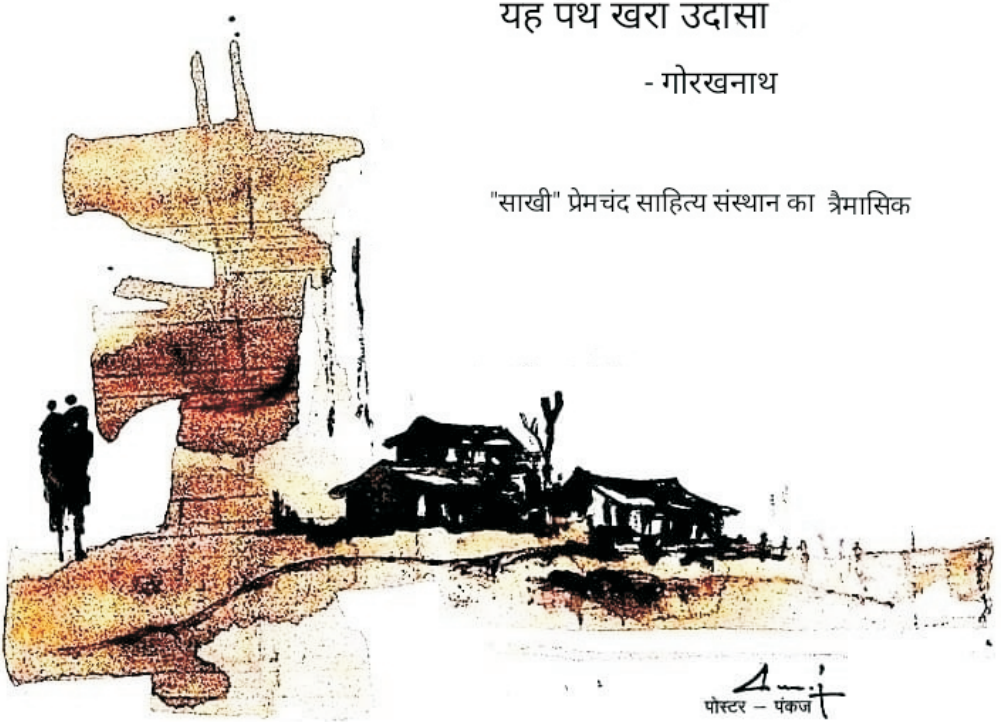

पोस्टर – पंकज

अंक : 32
मास : जनवरी 2021
ISSN : 2231-5187

साखी

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक : सदानन्द शाही

www.saakhee.com
www.notnul.com j kh a v dhi Cky

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक मण्डल : पी. एन. सिंह/अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही
सहायक सम्पादक : डॉली मेघनानी

प्रतिनिधि : भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 **(गोरखपुर)**
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 **(आगरा)**
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 **(इलाहाबाद)**
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 **(गाजीपुर)**
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 **(बिलासपुर)**
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 **(जयपुर)**
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 **(गया)**

आवरण चित्र : गोबर्धन 1605

सज्जा : राहुल शा

प्रसार : विश्वमौलि, मो. 9450209580
इन्दुशेखर त्रिपाठी, मो. 7376831000

अक्षर संयोजन : श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी

मुद्रक : मित्तल आफसेट, वाराणसी

मूल्य :

यह अंक	:	**अस्सी रुपये मात्र**
सदस्यता	:	**तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) तीन हजार रुपये मात्र**
संस्थाओं के लिए	:	**पाँच सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) पाँच हजार रुपये मात्र**
विदेश के लिए	:	**चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस अंकों के लिए) पाँच सौ डालर मात्र**

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARBOLANKAX** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

सम्पादकीय सम्पर्क
क
बी-2, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर
लंका, वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 09450091420, 9616393771

ईमेल
saakhee2000@gmail.com
sadanandshahi@gmail.com
editor@saakhee.com
वेबसाइट
www.saakhee.com

(मनोज कुमार सिंह, सचिव, प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. से प्रकाशित)

इस अंक में

सम्पादकीय

गोरखनाथ जनपदीय साहित्य के अग्रधावक हैं — सदानन्द शाही — 5

व्याख्यान

हंसिबा खेलिबा धरिबा ध्यानं — ओशो — 15

गोरखबानी का मर्म

हिन्दी काव्य में योग-प्रवाह — पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल — 42

गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) — हजारी प्रसाद द्विवेदी — 54

गोरक्षनाथ : परम्परा और साधना का स्वरूप — परशुराम चतुर्वेदी — 60

गोरखनाथ का महत्व — रांगेय राघव — 67

लोकभाषा में संप्रदाय के नैतिक उपदेश — हजारी प्रसाद द्विवेदी — 72

गोरखबानी — गार्डन जुर्जेविच, अनुवाद–शुभा राव — 77

गोरखनाथ की लोकव्याप्ति

नाथयोग और भारतीय संत-साहित्य — रामचन्द्र तिवारी — 86

महाराष्ट्र और गुजरात के संतों पर नाथ-योग का प्रभाव — रामचन्द्र तिवारी — 93

गोरखनाथ की लोकव्याप्ति — लक्ष्मी सक्सेना, अनुवाद–शुभाराव — 104

महाराष्ट्र की भूमि में गुरु गोरखनाथ का दीक्षा दान — भारती गोरे — 110

टिप्पणी- 1. ज्ञानेश्वरी में नाथ संप्रदाय की परंपरा

2. श्रीमद्भागवत में उल्लिखित नौ योगीश्वर और नाथ संप्रदाय की परंपरा

गोरखकथा के लोक-प्रसंग

चेत मछंदर गोरख आया	सुभाष राय	115
जालन्धरनाथ	श्रद्धा सिंह	122
गोपीचंद और मयनावती	हजारी प्रसाद द्विवेदी	125
पूरन भगत और राजा रसालू	हजारी प्रसाद द्विवेदी	129
भर्तृहरि	रामलाल श्रीवास्तव	132
चौरंगीनाथ	रामलाल श्रीवास्तव	138
जग में अमर राजा भरथरी बजे तबला निसान	रामसुधार सिंह	142

जनपदीय भाषाओं के उन्नायक

भोजपुरी के गोरख की भोजपुरी	प्रकाश उदय	148
अलख को लखता लोक	प्रमोद कुमार तिवारी	154
गोरखनाथ और कबीर	सुभाष चन्द्र कुशवाहा	162
गोरखनाथ : जनपदीय भाषा में कविताई	अवधेश प्रधान	167

गोरखनाथ की सबदी की पुनर्रचना

गोरखबोध	बोधिसत्व	172

गोरखबानी एक चयन

सबदी		182
पद		211

कुछ जरूरी किताबें		226
इस अंक के सहयोगी		227

●

गोरखनाथ जनपदीय साहित्य के अग्रधावक हैं

1

गुरु गोरखनाथ नाथ परम्परा में सबसे प्रमुख हैं। उन्हें नाथ सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। गोरखनाथ का समय राजनीतिक और धार्मिक-सांस्कृतिक चुनौतियों का समय था। चुनौतियाँ जितनी बाहर से थीं उतनी ही भीतर भी थीं। गुरु गोरखनाथ ने परम तत्व की एकता की भावना स्थापित करके धार्मिक सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना किया। हठयोग की साधना प्रस्तावित करके साधना के क्षेत्र में पनप रहे स्वैराचार पर रोक लगाई। अनेक तरह के सामाजिक बंधनों और ऊँच-नीच के भेदभाव के कारण जनता त्रस्त थी। इस त्रास और यातना से मुक्ति के लिए भारत की जनता छटपटा रही थी। ऐसे में गुरु गोरखनाथ ने मनुष्य मात्र की समानता का संदेश देकर बाह्याचार और कर्मकांड के चंगुल से जन सामान्य को मुक्ति दिलाई।

गुरु गोरखनाथ का प्रभाव समूचे भारत वर्ष में महसूस किया जाता है। विशेष तौर पर उनका प्रभाव नेपाल की तराई से लेकर उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल से होते हुए उड़ीसा तक फैला है। पंजाब, राजस्थान से होते हुए गुजरात और महाराष्ट्र तक उनके अनुयायी मौजूद हैं। इस तरह गोरखनाथ की महिमा का प्रसार अखिल भारतीय है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन बिल्कुल दुरुस्त है कि 'गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे' इसके साथ ही यह भी सही है कि हमारी आज की बहुतेरी समस्याओं के जवाब गुरु गोरखनाथ के चिंतन में मौजूद हैं।